

सूरह मुर्सलात - 77

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

सूरह मुर्सलात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 50 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में मुर्सलात (हवाओं) की शपथ ली गई है। इसलिये इस का नाम सूरह मुर्सलात है। इस में झकड़ को प्रलय के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है। फिर प्रलय का भ्यावः चित्र दिखाया गया है।
- आयत 16 से 28 तक प्रतिफल के दिन के होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हुये उस पर सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में क़्यामत के झुठलाने वालों को उस दिन जिस दुर्दशा का सामना होगा उस का चित्रण किया गया है। और आयत 41 से 44 तक सदाचारियों के सुफल का चित्रण किया गया है।
- अन्त में झुठलाने वालों की अपराधिक नीति पर कड़ी चेतावनी दी गई है।
- अब्दुल्लाह बिन मसूऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम मिना की वादी में थे। और सूरह मुर्सलात उतरी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसे पढ़ रहे थे और हम उसे आप से सीख रहे थे। (सहीह बुख़ारी: 4930, 4931)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भेजी हुई निरन्तर धीमी
वायुओं की!

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًاۙ

2. फिर झकड़ वाली हवाओं की!

فَالْعَصْفَاتِۙ عَصْفًاۙ

3. और बादलों को फैलाने वालियों की!^[1]

وَالنَّشْرَاتِۙ نَشْرًاۙ

4. फिर अन्तर करने^[2] वालों की।

فَالْفُرَاتِۙ فُرَاتًاۙ

1 अर्थात जो हवायें अल्लाह के आदेशानुसार बादलों को फैलाती हैं।

2 अर्थात सत्योसत्य तथा वैध और अवैध के बीच अन्तर करने के लिये आदेश लाते हैं।

5. फिर पहुँचाने वालों की वही
(प्रकाशना^[1]) को! فَالْمُلْكِيَّتِ ذِكْرًا ۝
6. क्षमा के लिये अथवा चेतावनी^[2] के
लिये! عَذْرًا أَوْ تَذْرًا ۝
7. निश्चय जिस का वचन तुम्हें दिया
जा रहा है वह अवश्य आनी है। إِنَّمَا تَعْدُونَ لَوَاقِعٌ ۝
8. फिर जब तारे धुमिल हो जायेंगे। فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۝
9. तथा जब आकाश खोल दिया जायेगा। وَإِذَا السَّمَاءُ فُتِحَتْ ۝
10. तथा जब पर्वत चूर-चूर कर के उड़ा
दिये जायेंगे। وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ۝
11. और जब रसूलों का एक समय
निर्धारित किया जायेगा^[3]। وَإِذَا الرُّسُلُ اقْتَتَتْ ۝
12. किस दिन के लिये इस को निलम्बित
रखा गया है? لِأَيِّ يَوْمٍ أُخِّلَتْ ۝
13. निर्णय के दिन के लिये। لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝
14. आप क्या जानें कि क्या है वह निर्णय
का दिन? وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝
15. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के
लिये। وَيَلَّيْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
16. क्या हम ने विनाश नहीं कर दिया
(अवैज्ञा के कारण) अगली जातियों का? أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ۝
17. फिर पीछे लगा^[4] देंगे उन के पिछलों को। ثُمَّ نَتَّبِعُهُمُ الْآخَرِينَ ۝

1 अर्थात् जो वही (प्रकाशना) ग्रहण कर के उसे रसूलों तक पहुँचाते हैं।

2 अर्थात् ईमान लाने वालों के लिये क्षमा का वचन तथा काफिरों के लिये यातना की सूचना लाते हैं।

3 उन के तथा उन के समुदायों के बीच निर्णय करने के लिये। और रसूल गवाही देंगे।

4 अर्थात् उन्हीं के समान यातना-ग्रस्त कर देंगे।

18. इसी प्रकार हम करते हैं अपराधियों के साथ।
19. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
20. क्या हम ने पैदा नहीं किया है तुम्हें तुच्छ जल (वीर्य) से?
21. फिर हम ने रख दिया उसे एक सुदृढ़ स्थान (गर्भाशय) में।
22. एक निश्चित अवधि तक।^[1]
23. तो हम ने सामर्थ्य^[2] रखा, अतः हम अच्छा सामर्थ्य रखने वाले हैं।
24. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
25. क्या हम ने नहीं बनाया धरती को समेट^[3] कर रखने वाली।
26. जीवित तथा मुर्दों को।
27. तथा बना दिये हम ने उस में बहुत से ऊँचे पर्वत। और पिलाया हम ने तुम्हें मीठा जल।
28. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
29. (कहा जायेगा): चलो उस (नरक) की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे।

كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝

وَيَلُومُنَا يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝

فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقَدِيرُونَ ۝

وَيَلُومُنَا يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝

أَحْيَاءَ ۖ وَأَمْوَاتًا ۝

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَكُم مَّاءً قُرَآتًا ۝

وَيَلُومُنَا يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

إِنطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝

1 अर्थात् गर्भ की अवधि तक।

2 अर्थात् उसे पैदा करने पर।

3 अर्थात् जब तक लोग जीवित रहते हैं तो उस के ऊपर रहते तथा बस्ते हैं। और मरण के पश्चात् उसी में चले जाते हैं।

30. चलो ऐसी छाया^[1] की ओर जो तीन शाखाओं वाली है।
31. जो न छाया देगी और न ज्वाला से बचायेगी।
32. वह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियाँ भवन के समान।
33. जैसे वह पीले ऊँट हों।
34. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
35. यह वह दिन है कि वह बोल^[2] नहीं सकेंगे।
36. और न उन्हें अनुमति दी जायेगी कि वह बहाने बना सकें।
37. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
38. यह निर्णय का दिन है, हम ने एकत्र कर लिया है तुम को तथा पूर्व के लोगों को।
39. तो यदि तुम्हारे पास कोई चाल^[3] हो तो चल लो?
40. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
41. निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे।

إِنظُرُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۝

لَا ظِلُّهُ وَلَا يُعِثُّ مِنَ النَّارِ ۝

إِنَّمَا تَرَىٰ بُشْرًا مِّنْ أَلْفُورٍ ۝

كَأَنَّهُ جُمُلَةٌ صُغُرٌ ۝

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

هَذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ۝

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنَاهُ وَالْأَوَّلِينَ ۝

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُوا ۝

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

إِنَّ الْمَتَّعِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ۝

1 छाया से अभिप्राय: नरक के धुवें की छाया है। जो तीन दिशाओं में फैला होगा।

2 अर्थात् उन के विरुद्ध ऐसे तर्क प्रस्तुत कर दिये जायेंगे कि वह अवाक रह जायेंगे।

3 अर्थात् मेरी पकड़ से बचने की।

42. तथा मन चाहे फलों में।
43. खाओ तथा पिओ मनमानी उन कर्मों के बदले जो तुम करते रहे।
44. हम इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।
45. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
46. (हे झुठलाने वालो!) तुम खा लो तथा आनन्द ले लो कुछ^[1] दिन। वास्तव में तुम अपराधी हो।
47. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
48. जब उन से कहा जाता है कि (अल्लाह के समक्ष) झुको तो झुकते नहीं।
49. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
50. तो (अब) वह किस बात पर इस (कुर्आन) के पश्चात् ईमान^[2] लायेंगे?

- وَقَوَائِمَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾
- كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾
- إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾
- وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾
- كُلُوا وَاسْمَعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّخْرِمُونَ ﴿٤٦﴾
- وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾
- وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾
- وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾
- فَيَأْتِي حَدِيثًا بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

1 अर्थात् संसारिक जीवन में।

2 अर्थात् जब अल्लाह की अन्तिम पुस्तक पर ईमान नहीं लाते तो फिर कोई दूसरी पुस्तक नहीं हो सकती जिस पर वह ईमान लायें। इसलिये कि अब कोई और पुस्तक आसमान से आने वाली नहीं है।